रविवार 9 मई, 2021

विषय **— आदम और पतित आदमी**

स्वर्ण पाठ: **याकूब** 1 : 18

"उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥"

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 65 : 18, 19, 21-24

18 इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और
उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा॥
19 मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा॥
21 वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे॥
22 ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए
अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे॥
23 उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके
बाल-बच्चे उन से अलग न होंगे॥
24 उनके पुकारने से पहिले ही मैं उन को उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 8 : 1, 3-6

1 हेयहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है॥
3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तरागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं;
4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है॥
6 तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है॥

2. उत्पत्ति 1: 26, 28 (*से* :), 31 (*से 1st.*)

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।

28 और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो।

31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

3. उत्पत्ति 2 : 6-9, 16, 17

6 तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी

7 और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।

8 और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई; और वहां आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।

9 और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया।

16 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है:

17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥

4. उत्पत्ति 3 : 1-7, 9-13, 23, 24

1 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?

2 स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं।

3 पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

4 तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,

5 वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।

6 सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।

7 तब उन दोनों की आंखे खुल गई, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये।

9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है?

10 उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।

11 उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है?

12 आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।
13 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया।
23 तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था।
24 इसलिये आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करुबों को, और चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया॥

5. नीतिवचन 30 : 5, 6

5 ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।
6 उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे॥

6. भजन संहिता 51 : 1, 2, 10-12

1 हेपरमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
2 मुझे भलीं भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
11 मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥

7. इफिसियों 4 : 17, 18, 23, 24

17 इसलिये मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।
18 क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं।
23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
24 और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धामिर्कता, और पवित्रता में सृजा गया है॥

8. 2 कुरिन्थियों 5 : 1, 6-8

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है।
6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।
7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।

8 इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

9. 1 कुरिन्थियों 15 : 22

22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 516 : 9-13, 19-23

ईश्वर सभी चीजों का, उसकी अपनी समानता पर पक्षपात करता है। जीवन अस्तित्व में परिलक्षित होता है, सत्यता में सत्य, अच्छाई में ईश्वर, जो अपनी शांति और स्थायित्व प्रदान करता है। निःस्वार्थ भाव से प्यार, सुंदरता और रोशनी में नहाया हुआ। ... मनुष्य, उसकी समानता में बना, उसके पास सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाता है। भगवान के साथ सहवास और शाश्वत के रूप में आदमी और औरत हमेशा के लिए, अनंत पिता-माता भगवान की महिमा में परिलक्षित होते हैं।

2. 517: 31-4 (*से 1st.*)

मिट्टी की खेती करने के लिए आदमी नहीं बनाया गया है। उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, अधीनता नहीं। वह पृथ्वी और स्वर्ग में विश्वास का स्वामी है, - स्वयं अपने निर्माता के अधीन है।

3. 200 : 9-13

जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है, भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से, और वह क्षय और धूल के अधीन नहीं है।

4. 519 : 3-6

देवता उनके कार्य से संतुष्ट थे। अन्यथा, वह कैसे हो सकता है, क्योंकि आध्यात्मिक निर्माण उनके अनंत आत्म-नियंत्रण और अमर ज्ञान का प्रकोप था?

5. 216 : 18-21

मनुष्यों की महान गलती यह है कि उस आदमी को, भगवान की छवि और समानता को मानने के लिए, भौतिक और आत्मा दोनों अच्छाई और बुराई दोनों हैं।

6. 521 : 21-22, 26-29

उत्पत्ति *2: 6.* तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी

उत्पत्ति के दूसरे अध्याय में ईश्वर और ब्रह्माण्ड के इस भौतिक दृष्टिकोण का विवरण है, एक कथन जो पहले दर्ज किए गए वैज्ञानिक सत्य के बिल्कुल विपरीत है।

7. 522 : 5-17

पहला रिकॉर्ड भगवान को सभी शक्ति और सरकार प्रदान करता है, और मनुष्य को भगवान की पूर्णता और शक्ति से संपन्न करता है। दूसरा रिकॉर्ड कालानुक्रमिक मनुष्य के रूप में उत्परिवर्तित और नश्वर, - जैसा कि देवता से टूट कर और स्वयं की कक्षा में परिक्रमा करते हुए। अस्तित्व, देवत्व से अलग, विज्ञान असंभव के रूप में समझाता है।

यह दूसरा रिकॉर्ड अचूक रूप से अपने बाह्य रूपों में त्रुटि का इतिहास देता है, जिसे जीवन और बुद्धि कहा जाता है। यह पेंटिज्म को रिकॉर्ड करता है, दिव्य आत्मा की सर्वोच्चता के विपरीत; लेकिन इस राज्य को अस्थायी घोषित किया जाता है और यह आदमी नश्वर हो जाता है,

8. 580 : 21-27

एडम नाम झूठे दंभ का प्रतिनिधित्व करता है कि जीवन शाश्वत नहीं है, लेकिन शुरुआत और अंत है; कि अनंत परिमित में प्रवेश करता है, वह बुद्धि अ-बुद्धि में प्रवेश करती है, और वह आत्मा भौतिक अर्थों में बसता है; उस अमर मन का परिणाम होता है, और नश्वर मन में पदार्थ; एक ईश्वर और निर्माता ने जो बनाया, उसमें प्रवेश किया और फिर पदार्थ की नास्तिकता में गायब हो गया।

9. 307 : 7-16, 26-13

बुराई अभी भी खुद को मन होने की पुष्टि करती है, और घोषणा करती है कि एक से अधिक बुद्धि या भगवान हैं। इसे कहते हैं: "बहुत से भगवान और देवता होंगे। मैं घोषणा करता हूं कि भगवान बुरे दिमाग और बुरी आत्माएं बनाते हैं, और मैं उनकी सहायता करता हूं। सत्य पक्ष बदल देगा और आत्मा के विपरीत होगा। मैं आत्मा को इस बात में लगाऊंगा कि मैं किस चीज को बुलाऊं, और मामला जीवन को उतना ही लगेगा, जितना कि परमात्मा, आत्मा को, जो एकमात्र जीवन है।"

यह त्रुटि स्वयं त्रुटि साबित हुई है। इसका जीवन जीवन नहीं, बल्कि एक अस्तित्व का क्षणिक, गलत अर्थ है, जो मृत्यु में समाप्त होता है।

मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

त्रुटि के भयानक दिन, कालापन और अराजकता के ऊपर, सत्य की आवाज अभी भी कहती है: "एडम, तुम कहाँ हो? चेतना, तुम कहाँ हो? क्या आप इस विश्वास में निवास करते हैं कि मन भौतिक है, और यह बुराई मन है, या आप जीवित विश्वास में कला है कि एक ईश्वर है और उसकी आज्ञा रख सकता है?" जब तक सबक नहीं सीखा जाता है कि भगवान एकमात्र मन शासी आदमी है, तब तक नश्वर विश्वास डर जाएगा क्योंकि यह शुरुआत में था, और मांग से छिप जाएगा, "आप कहां हैं?" यह भयानक मांग, "एडम, तुम कहाँ हो?" सिर, हृदय, पेट, रक्त, नसों, आदि से

प्रवेश द्वारा जुड़ा हुआ है: "लो, यहां मैं हूं, शरीर में खुशी और जीवन की तलाश कर रहा हूं, लेकिन केवल एक भ्रम ढूंढ रहा हूं, झूठे दावों का सम्मिश्रण, झूठी खुशी , दर्द, पाप, बीमारी और मृत्यु।"

10. 282 : 28-31

जो कुछ भी मनुष्य के पाप को दर्शाता है, या भगवान के विपरीत, या भगवान की अनुपस्थिति, एडम का सपना है, जो न तो माइंड है और न ही मनुष्य है, क्योंकि यह पिता की भीख नहीं है।

11. 545 : 27-5

सत्य के पास सभी त्रुटियों के लिए एक उत्तर है, - पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए: ''तू मिट्टी [शून्य]तो है और मिट्टी ही में फिर मिल [शून्य] जाएगा।''

"जैसा कि एडम [त्रुटि] में सभी मर जाते हैं, यहां तक कि मसीह में भी [सत्य] सभी को जीवित किया जाएगा।" मनुष्य की नश्वरता एक मिथक है, क्योंकि मनुष्य अमर है। यह गलत विश्वास कि आत्मा अब मामले में डूबी हुई है, भविष्य के कुछ समय में इससे मुक्ति मिलेगी, — यह विश्वास अकेले नश्वर है। आत्मा, ईश्वर, कभी नहीं उगता है, लेकिन "कल वही है, और आज है, और हमेशा के लिए।"

12. 265 : 5-15

मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

13. 470 : 32-5

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

14. 14 : 25-30

भौतिक समझ के विश्वास और सपने से पूरी तरह से अलग, आध्यात्मिक समझ और पूरी पृथ्वी पर मनुष्य के प्रभुत्व की चेतना को प्रकट करके, जीवन दिव्य है। यह समझ त्रुटि निकालती है और बीमारों को चंगा करता है, और इसके साथ आप "धिकारी की नान" बोल सकते हैं।

15. 171 : 4-8 (से *4th* ,)

भौतिकता के आध्यात्मिक विपरीत के माध्यम से, यहां तक कि मसीह, सत्य के माध्यम से भी, मनुष्य दिव्य विज्ञान की कुंजी के साथ स्वर्ग के द्वार को फिर से खोल देगा, जिसके बारे में मनुष्यों का मानना है कि वे बंद थे, और वह खुद को बेदाग, ईमानदार, शुद्ध और स्वतंत्र पाएंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति

अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6